निबन्ध षटकम्

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

निबन्ध षटकम्

डॉ. सम्पूर्णानन्द तिवारी

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

निबन्ध षटकम्

संस्करण : 2019
© लेखक
ISBN: 978-93-88998-22-2

इस सम्पादित पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के द्वारा प्रकाशित।

SAMPLE COPY

आमुख



संस्कृत भाषा में रचित मानव सभ्यता के आदि ग्रन्थ ऋग्वेद एवं विपुल वैदिक साहित्य में प्रौढ़ काव्य के अनेक उपादान जैसे सुस्पष्ट छन्द योजना, गम्भीर वाक्यविन्यास, रसात्मक अभिव्यक्ति, अलंकारिक अर्थाभिव्यक्ति आदि के निदर्शन से इनमें काव्य शास्त्रीय तत्वों के चिन्तन का दर्शन होता है। लौकिक संस्कृत के आदिकाव्य **रामायण** और मानव सभ्यता के विशालतम महाकाव्य **महाभारत** में काव्य तत्वों का प्रौढ़ निदर्शन प्राप्त होता है। पारम्परिक रूप से दक्षिणामुख भगवान शिव को समस्त विषयों और विद्याओं का उत्सव मानने वाली भारतीय परम्परा काव्यशास्त्र की उत्पत्ति भी उन्हीं से मानती है। विक्रम सम्वत् की सम्भवतः प्रथम सदी में भरतमुनि रचित नाट्यशास्त्र विविध कलाओं और अभिनय विद्या के साथ–साथ काव्यशास्त्र का भी प्रौढ़ ग्रन्थ है। किन्तु भामह रचित "काव्यालंकार" को काव्य शास्त्रीय समीक्षा के प्रथम स्वतंत्र ग्रन्थ होने का श्रेय दिया जाता है। परवर्ती काल में रामायण आदि उपजीव्य काव्यों तथा कवि कालिदास, भास, अश्वघोष, बाणभट्ट, दण्डी, भारवि, भवभूति, माघ आदि महाकवियों एवं अन्य विविध रचनाकारों

SAMPLE

के कृतित्व को आधार बनाकर काव्य सौन्दर्य के विभिन्न पहलुओं की मीमांसा के साथ काव्यशास्त्रीय चिन्तन की सुदीर्घ व स्थायी परम्परा शुरू हुई जिससे कालांतर में अलंकार, रीति, रस, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य को आधार बनाकर संस्कृत काव्यशास्त्र के छः सम्प्रदायों या स्कूलों का विकास हुआ।

वर्तमान में संस्कृत के साहित्यिक समीक्षा के इन स्कूलों के इतिहास तथा मुख्य प्रतिपाद विषयों को सरल व रोचक ढंग से संक्षेप में एक स्थान पर प्रस्तुत करने वाली रचनाओं की बहुत कमी रही है। इस क्षेत्र में डॉ सम्पूर्णानन्द तिवारी जी ने प्रौढ़ विद्वता का परिचय देते हुए अपनी इस कृति निबन्धषटकम् में संस्कृत काव्यशास्त्र के छः स्कूलों के महत्वपूर्ण तत्वों उनके इतिहास एवं अन्य पहलुओं को परिनिष्ठित, सारगर्भित ढंग से प्रतिपादित किया हैं जो एक सुधी काव्य समीक्षक के विषय पर विद्वतापूर्ण अधिकार को परिलक्षित करता है।

काव्य समीक्षा के विद्यालयों में अलंकार सम्प्रदाय सबसे पुराना है। काव्यालंकार के रचयिता आचार्य भामह के पश्चात महाकवि आचार्य दण्डी ने काव्यालंकार को उनके शोभाकारक धर्म के रूप में प्रतिस्थापित किया। भट्टोद्भट, रूद्रट, लोल्लट आदि आचार्यों ने अलंकार आधारित समीक्षा को परिनिष्ठित किया।

आठवीं शताब्दी में आलोचना शास्त्र के विकास की इस परम्परा में आचार्य वामन ने "रीति" को काव्य की आत्मा के रूप में परिभाषित करते हुए "काव्यालोक" में रीति सम्प्रदाय को प्रवर्तित किया। वामन के पश्चात कश्मीर में आचार्य आनन्दवर्धन ने "ध्वन्यालोक" नामक ग्रन्थ में "ध्वनि" को बहुत ही प्रौढ़ तरीके से काव्य की आत्मा के रूप में स्थापित किया। कश्मीर के महान आचार्य अभिनव गुप्त ने "ध्वन्यालोक" की "लोचन" टीका के माध्यम से इसे प्रौढ़ आधार दिया। इनके बाद आचार्य मम्मट ने अपनी काव्यशास्त्र की अन्यतम प्रौढ़ कृति "काव्यप्रकाश" में "ध्वनि" को काव्य के आत्मतत्व के रूप में स्थापित

करते हुए काव्य में रीति अलंकार, गुण आदि के यथोचित स्थान को निर्धारित करते हुए ध्वनि संस्थापक परमाचार्य की पद्वी प्राप्त की।

नवीं व दसवीं सदी तक कश्मीर प्रान्त काव्यशास्त्रीय चिन्तन के केन्द्र के रूप में स्थापित हो चुका था। कश्मीर की स्वर्गिक वादियों और राजाओं के उदार संरक्षण ने अनेक प्रतिभाओं को जन्म दिया। ग्यारहवीं सदी में कश्मीरी आचार्य कुन्तक ने अपने ग्रन्थ "वक्रोक्ति जीवित" में "वक्रोक्ति" को काव्य की जीवनशक्ति घोषित किया। बारहवीं शताब्दी में कश्मीर के ही बहुश्रुत प्रतिभाशाली आचार्य क्षेमेन्द्र ने "औचित्य–विचारचर्चा" नामक ग्रन्थ में काव्य के "औचित्य" तत्व को काव्य की आत्मा के रूप में स्थान दिलाने का प्रयास किया।

इन पाँचों सम्प्रदाय के अतिरिक्त काव्यशास्त्र में रस सम्प्रदाय का एक विशिष्ट स्थान है। प्रारम्भिक काव्यों और काव्यशास्त्रियों ने पारम्पारिक रूप से अन्य समीक्षा के विभिन्न पहलुओं पर जोर डालने के वाद भी रस की महत्ता को निर्विवाद रूप से स्वीकार किया है। भरत मुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में रस को उसकी आत्मा माना था। दशरूपककार, आचार्य धनन्जय ने रसवादी आलोचना को पुष्ट किया। दसवीं शताब्दी में महाकवि राजशेखर ने **"काव्यमीमांसा"** में काव्यपुरूष का रूपक निरूपित करते हुए "रस" को काव्य की आत्मा घोषित किया। बाद में उत्कल देश के आचार्य विश्वनाथ ने अपने प्रौढ़ ग्रन्थ "साहित्यदर्पण" में रसात्मक वाक्य को ही काव्य के रूप में परिभाषित करते हुए (वाक्यं रसात्मकं काव्यम्) अन्य काव्य तत्वों जैसे गुण, अलंकार व रीतियों आदि को काव्य का उत्कर्षाधायक तत्व घोषित किया।

प्रस्तुत ग्रन्थ "निबन्धषट्कम" में संस्कृत काव्यशास्त्र के दो हजार वर्षों से भी सुदीर्घ इतिहास को सारगर्भित ढंग से सुधी जनों के समक्ष प्रस्तुत करने का जो प्रयास सम्पूर्णानन्द जी ने किया है, उसके लिए वे मुक्तकण्ठ से विद्धत समुदाय एवं साहित्य के विद्यार्थियों के

साधुवाद के पात्र हैं। हमें पूरी आशा व विश्वास है कि यह ग्रन्थ ग्रन्थकार के श्रीवर्धक होने के साथ ही संस्कृत काव्यशास्त्र के प्रति लोगों की जानकारी एवं अभिरूचि को बढ़ाने वाला सिद्ध होगा।

लक्ष्मणपुरी, चैत्र अमावस्या–2075 विक्रमाब्द्



डॉ. ब्रह्मदेव राम तिवारी।
आई.ए.एस.

नमूना • SAMPLE

भूमिका

संस्कृत काव्यशास्त्र के अध्ययन के लिए जब कोई विद्यार्थी प्रवृत्त होता है तो प्रथमतया उसे यही समझना अवश्यक होता है कि काव्य क्या है? शब्दार्थ सहितौ काव्यम् इत्यादि सहज व्याखाओं से परिचित होने के उपरान्त जब वह काव्य के शास्त्रीय गहराई में प्रवेश करता है तब उसके समक्ष विभिन्न दार्शनिक पृष्ठभूमि पर आधारित शास्त्रीय परम्पराओं का प्रकटन होता है।

यह तो सत्य है कि काव्य की आत्मा क्या है, यह बताने वाले जितने भी शास्त्रीय सम्प्रदाय हैं वे अपना आधार कहीं न कहीं भारतीय दर्शनों के सिद्धान्तों से प्राप्त करते हैं और उसी आधार पर अपने सम्प्रदाय का समर्थन करते हैं। प्रस्तुत पुस्तक के लेखन में काव्यशास्त्रियों के दार्शनिक पृष्ठभूमि और पूर्वाग्रह को दृष्टिगत रखते हुए उनके तर्कों को प्रस्तुत किया गया है। इसका प्रयास किया गया है कि विद्यार्थी जब किसी सम्प्रदाय विशेष के विषय में पढ़े तो उस सम्प्रदाय के संस्थापक आचार्य किस भारतीय दर्शन से प्रभावित है; यह भी उसके मनस में विद्यमान रहे, तभी पाठक सहजता से काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों को समझ सकेगा।

यद्यपि किसी रचना के साथ मुख्यतः उसके रचनाकार का नाम उल्लिखित होता है किन्तु रचनाकार अच्छी तरह से जानता है कि वह अकेला कोई सृजन नहीं कर सकता। सृजन तब होता है जब सर्जक को साथ प्राप्त होता है कुछ सहृदय व्यक्तियों का अैर कुछ

SAMPLE

सहायक ग्रन्थों का। मैं भी उनमें से एक हूँ अतः कृतज्ञता ज्ञापन अपना प्रथम कर्तव्य समझता हूँ। सर्वप्रथम मैं यह कहुँगा कि यह रचना मेरे परमपूज्य पिता जी एवं परमादरणीया माता जी के अमोघ आशीर्वाद का ही प्रतिफल है। अपने अर्द्धांगिंनी श्रीमती सीमा त्रिपाठी का भी आभारी हूँ जिन्होंने अपने पारिवारिक गुरूतर दायित्वों से यथासम्भव समय निकालकर प्रूफरीडिंग इत्यादि में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अपने अग्रजों एवं परिवार के सभी सदस्यों की सतत् प्रेरणा का भी अपना विशेष स्थान रहा।

पुस्तक लेखन में अपने निर्देशक गुरू प्रो0 श्री रमाशंकर मिश्र (पूर्व विभागध्यक्ष संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय) की प्रेरणा और आशीर्वाद की महती भूमिका है उन्हें कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। अपने शुभचिन्तकों और मित्रों का भी आभारी हूँ जिन्होंने सहायक ग्रन्थों की उपलब्धता सुनिश्चित की तथा मित्र डॉ0 ब्रहमदेव राम तिवारी (आई0ए0एस0) का विशेष आभारी हूँ, जिन्होंने अपने प्रशासकीय कार्यों की व्यस्तता के बाद भी इस पुस्तक का आमुख लिखकर मुझे विशेष रूप से अनुगृहीत किया।

डॉ. सम्पूर्णानन्द तिवारी

विषय सूची

आमुख			*v*
भूमिका			*ix*
अध्याय –1	:	काव्य का अलंकार प्रस्थान	1
अध्याय –2	:	रीति सम्प्रदाय	11
अध्याय –3	:	वक्रोक्ति सिद्धान्त	20
अध्याय –4	:	रस सम्प्रदाय	29
अध्याय –5	:	औचित्य प्रस्थान	41
अध्याय –6	:	संस्कृत में ध्वनिकाव्य	47
सन्दर्भ ग्रंथ सूची			*55*

नमूना • SAMPLE